

॥ श्री ॥

॥ बलल ॥

जयदेव जयदेव जय दुंढीरलकल  
आगमने मलल उल्लहलस जलहलल ॥धृ॥

तुङ्गल दलरुनलरुथ जीव बहु तललमललल  
घेऊनल दलरुने आनंद झललल ॥

सवलुके संकट तलरललल अवनी आलल  
धनुय जेथे तुङ्गल पदरुसुपरुश झललल ।  
होतील अनंत चुकल हलतुनी आमुचुयल  
शेष नसलवल करुणी प्रलरुथनल ॥

ओवललीतो पंचलरती मनोभलवे,  
मलनुय करुनल घुयल भकुतलंकी सेवल ।  
हलक देतल संकटसमयी गुणवंतल,  
धलवपलव तू उधुदलरकरुतल ॥

★★★★★